NJESR/June-2023/Volume 05/issue-06 E-ISSN-2582-5836
DOI 10.53571/NIESR.2023.05.06 67-70

आर्थिक विकास का महत्व

गीता मीना
शोधार्थी एवं व्याख्याता (स्कूल शिक्षा)
रा.उ.मा.वि. बांसखो बस्सी, राजस्थान

(Received: 15 May 2023 / Revised: 29 May 2023 / Accepted: 15 June 2023 / Published: 28 June 2023)

सारः— आर्थिक विकास का अभिप्राय आर्थिक क्षेत्र में परिवर्तन की उस प्रक्रिया से लगाया जाता है कि जिसके द्वारा उत्पादन शक्ति, राष्ट्रीय आय प्रति व्यक्ति आय में स्थायी वृद्धि होती है। आर्थिक सरंचना व देशवासियों के दृष्टिकोण में परिवर्तनों से जनता के जीवन स्तर में सुधार, वितरण व्यवस्था में न्याय व मानव के सर्वगीण विकास का मार्ग प्रशस्त होता है। आर्थिक समृद्धि एवं भौतिक सुखों की प्राप्ति में वृद्धि होती है। कुछ अर्थशास्त्री प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि को ही आर्थिक विकास कहते है जबकि कुछ अर्थशास्त्री इसे प्रक्रिया मानते है।

आर्थिक विकास से आशय राष्ट्रीय आय में वृद्धि करके निर्धनता को दूर करना तथा सामान्यजन के जीवन स्तर में सुधार करना है। आर्थिक विकास से रोजगार के अवसरों में वृद्धि होती है बेरोजगारी का समापन होता है और रोजगार प्राप्त करने वाले व्यक्तियों के चुनाव के पर्याप्त अवसर मिल जाते है। रूचि के अनुसार कार्य के चुनाव से श्रम की कार्यकुशलता एवं दक्षता में वृद्धि होती है एवं मानव शक्ति साधनों का सदुपयोग होता है।

संकेत शब्द : आर्थिक विकास, उत्पादन शक्ति, राष्ट्रीय आय प्रति व्यक्ति आय. रोजगार।

आर्थिक विकास एक सतत प्रक्रिया है इसका अर्थ कुछ विशेष प्रकार की शक्तियों के कार्यशील रहने के रूप में लगाया जाता है। इन शक्तियों के एक अवधि तक सतत कार्यशील रहने के कारन आर्थिक चर मूल्यों में सदैव परिवर्तन व विवर्तन होते रहते है । यद्यपि इस प्रक्रिया के फलस्वरूप किसी अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों से परिवर्तन तो होता है किन्तु इस प्रक्रिया का सामान्य परिणाम राष्ट्रीय आय में वृद्धि होना है। आर्थिक विकास का महत्व विश्व में निर्धनता के निराकरण व आर्थिक विषमताओं के समापन का एक मात्र विकल्प आर्थिक विकास ही है और इसके द्वारा ही मानव का सर्वागीण विकास सम्भव होता है। आर्थिक विकास से न केवल मानव की आर्थिक समृद्धि व सम्पन्नता सम्भव होती है वरन अर्थव्यवस्था में सामाजिक एवं सांस्कृतिक उत्थान, राजनितिक स्थिरता और जनता के जीवन मार्ग प्रशस्त होता है। बी. एल. ओझा एवं मनोज कुमार ओझा (2014–2015)', आर्थिक विकास के कारन देश में उपलब्ध प्राकृतिक साधनों का तेजी से विदोहन होने लगता है और उनके विदोहन से लोगों की आय रोजगार तथा उत्पादकता में वृद्धि होती है। कृषि उद्योग एवं अन्य क्षेत्रों में भी विकास होता है जिससे रोजगार बढ़ने के अवसर प्राप्त होते है। आर्थिक विकास के कारन देश में आधारभूत उद्योगों के साथ–साथ उपभोग उद्योगों का भी तेजी से विकास होता है जिससे संतुलित विकास के साथ लघु एवं कुटीर उद्योगों को भी विकसित किया जा सकता है। तेज गति से औद्योगिक विकास के साथ साथ उद्योगों में विविधता, विशिष्टिकरण, बड़े पैमाने की उत्पति एवं श्रम विभाजन को प्रोत्साहन मिलता है।

राष्ट्रीय आय व प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि देश के प्राकृतिक साधनों के विदोहन, औद्योगीकरण, रोजगार अवसरों में वृद्धि तथा तीव्र पूंजी निर्माण से राष्ट्रीय आय व प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि होती है जो अंततः आर्थिक समृद्धि का मार्ग प्रशस्त करती है।

आर्थिक विकास के परिणामस्वरूप बचत व पूंजी निर्माण में वृद्धि होती है। नए–नए उद्योगों की स्थापना होती है, उत्पादन की नवीन विधियाँ अपनाई जाती है उसके लिए अधिकाधिक विनियोग किया जाता है। लोगों की बढ़ी

हुई मांग की पूर्ति के लिए उत्पादन वृद्धि भी अधिक विनियोग से सम्भव होती है।

संतुलित अर्थव्यवस्था एवं सामाजिक सेवाओं का विस्तार आर्थिक विकास देश में कृषि के साथ साथ उद्योगों का विकास करता है। कृषि से जनसंख्या का भार उद्योगों की ओर स्थानांतरित होता है। अर्थव्यवस्था का विकास एकाकी न रहकर विविधतापूर्ण होता है। अर्थव्यवस्था के सभी क्षेत्रों का संतुलित विकास होने से आर्थिक संकटों से मुक्ति मिलती है। आर्थिक विकास से ही अर्थव्यवस्था में शिक्षा, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य तथा अन्य सामाजिक सेवाओं का तेजी से विकास होता है। मनोरंजन के साधनों में वृद्धि होती है अतः अर्थव्यवस्था में विवेकशील, स्वस्थ जनसंख्या की वृद्धि होती है, उनकी औसत आयु बढ़ती है तथा मृत्यु दर घटती है।

लक्ष्मीनारायण नाथुरामका (2007) 2 अर्थव्यवस्था के सर्वांगीण विकास, उत्पादन में विविधता तथा अधिकता, वितरण में समानता व प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि के कारण जनता को उपभोग के लिए अधिकाधिक वस्तुएं व सेवाएं उपलब्ध होती है और उनका जीवन स्तर निरंतर ऊँचा होता जाता है।

आर्थिक विकास से देश की बाह्य आक्रमणों से सुरक्षा क्षमता बढती है तथा देश में पर्याप्त उत्पादन एवं उसके समुचित वितरण से आंतरिक शांति बनी रहती है। यही नहीं, सभी देशों में आर्थिक विकास के कारण अंतरराष्ट्रीय शांति का भी मार्ग प्रशस्त होता है क्योकि विश्व के किसी भी भाग में गरीबी अन्यत्र समृद्धि को निरंतर खतरा है। जनता की आशाओं एवं आवश्यकताओं की पूर्ति एस के मिश्र एवं वी. के. पूरी (2012) 3 आर्थिक विकास से देश की जनता की सामाजिक, राजनेतिक तथा आर्थिक आशाओं एवं आवश्यकताओं की पूर्ति सम्भव होती है जो अधिकतम सामाजिक कल्याण का मार्ग प्रशस्त करती है।

वी.पी. शर्मा (2005) ' निर्धनता के कुचक्र को तोडना भी आर्थिक विकास द्वारा सम्भव होता है क्योकी प्राकृतिक साधनों के विदोहन, औद्योगीकरण व रोजगार के अवसरों मेंवृद्धि से राष्ट्रीय आय और प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि

होती है। उपभोग व बचत में वृद्धि से विनियोग, उत्पादन व पूंजी निर्माण में वृद्धि होती है। अतः निर्धनता के निराकरण की व्यवस्था उत्पन्न होती है। अर्थव्यवस्था दुर्लभ और अविकसित होती है और लोग निर्धन एवं उनका जीवन स्तर बहुत निम्न होता है। अतः आर्थिक विकास से रोजगार उत्पन्न होने से लोगों को रोजगार मिलता है जिससे बेरोजगारी भी खत्म होती है और निर्धनता भी समाप्त होती है इसलिए किसी भी समाज, राज्य, राष्ट्र के लिए आर्थिक विकास अतिमहत्वपूर्ण होता है। आर्थिक विकास को बढ़ाना देने के लिए राज्यों और केंद्र सरकार को अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है जिससे रोजगार बढ़े बेरोजगारी कम हो सके और निर्धनता को समाप्त किया जा सके आदि।

निष्कर्षः– आर्थिक विकास किसी भी समाज, राज्य व देश की आर्थिक सम्पन्नता एवं समृद्धि की आधारशीला मानी जाती है जिससे रोजगार के अवसर बढ़ते है बेरोजगारी कम होती है प्रति व्यक्ति आय एवं राष्ट्रीय आय में वृद्धि होने लगती है जिससे देश की अर्थव्यवस्था में संतुलन बना रहता है। जीवन का स्तर उच्च होने लगता है शांति एवं सुरक्षा को बढ़ावा मिलता है। जनता की आवश्यकता एवं आशाओं की पूर्ति होने लगती हैं सामाजिक सेवाओं का विस्तार होता है, निर्धनता समाप्त होने लगती है है। अतः आर्थिक विकास का महत्व बहुत ही उपयोगी और आवश्यक इत्यादि ।

सन्दर्भः–

1. बी. एल. ओझा एवं मनोज ओझा (2014–15), भारत में आर्थिक पर्यावरण, आर. बी. डी. पब्लिशिंग हाउस जयपुर–नई दिल्ली।
2. लक्ष्मीनारायण नाथुरामका (2007), राजस्थान की अर्थव्यवस्था, कॉलेज हाउस चौड़ा रास्ता जयपुर ।
3. एस.के. मिश्र एवं वी. के. पूरी (2012), भारतीय अर्थव्यवस्था, हिमालया पब्लिशिंग हाउस नई दिल्ली।
4. वी.पी. शर्मा (2005), ग्रामीण समाजशास्त्र, पंचशील प्रकाशन जयपुर।